07 / 01 / 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संगमयुगी बादशाही का सतयुगी बादशाही से श्रेष्ठ होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा फरिश्ता बन पहुंचती हूं वतन में

➳ _ ➳ वहां देख रही हूं स्वर्ग की रचना की झलक

→ सतयुग के नजारे कितने लुभावने है

→ पर उनसे भी ज्यादा आकर्षक हैं कहीं दूर से आते शुभ संकल्पों के वाइब्रेशंस

→ मैं देख रही हूं पृथ्वी पर तपस्या लीन कर्मयोगी संगम युगी ब्राह्मणों

■ यह इनकी वाइब्रेशंस है

➢➢ मैं श्रेष्ठ संगमयुगी ब्राह्मण विचार लीन हूँ

➳ _ ➳ कौन सा युग श्रेष्ठ है!

➳ _ ➳ कौन सी बादशाही श्रेष्ठ है!

→ संगम युग की बेगमपुर की बादशाही

→ या सतयुग की विश्व की बादशाही

→ सतयुग में प्रकृति के नेचुरल साज़ जरूर जगायेंगे पर

■ यहां स्वयं प्रकृति का मालिक भगवान हमें जगाता है

■ इस जीवन की सबसे मधुर आवाज है

■ जब बाबा बुलाता है बच्चे मीठे बच्चे

■ ईश्वरी साज के आगे सतयुग के साज़ फीके

→ वहां सतोप्रधान स्वादिष्ट रस वाले वृक्ष के फल जरूर होंगे पर

■ वृक्ष पति द्वारा सर्व संबंधों का रस

■ यह डायमंड एज का फल मेरे नसीब में संगम युग में ही है

→ वहाँ होगा वैराइटी प्रकार का भोजन

■ और यहाँ है ब्रह्मा भोजन

■ देवताओं के भोजन से भी अति श्रेष्ठ

→ मां बाप के रूप में वहां महान आत्माएँ मिलेंगे

■ यहां परमपिता परमात्मा खुद हमारा माता और पिता है

■ अहो सौभाग्य मेरा

→ वहाँ दास-दासियों के हाथ में पलेंगे

■ यहाँ बाप के हाथों में पल रहे हैं

→ वहाँ रतन जड़ित झूलों में झूलेंगे

■ यहाँ मैं दिल तख्त नशीन आत्मा

■ कभी अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूल रही हूं...

■ तो कभी खुशियों के झूले में झूल रही हूं

■ बाप की गोदी ही मेरा झूला है।

→ वहां खेलने के लिए रतन होंगे खिलौने होंगे मित्र होंगे

■ लेकिन यहां बाप के साथ जिस रूप में चाहूं जिस संबंध में चाहूं खेल रही मैं

■ कभी मेरा सखा बन जाता है तो कभी बंधु बन जाता है

■ कभी मैं उसकी बच्ची बन जाती हूं कभी वह मेरा बच्चा बन जाता है

■ ऐसा अविनाशी खिलौना सतयुग में तो नहीं मिलेगा

■ अहो सौभाग्य मेरा

→ यहाँ तो गुडमार्निंग, गुडनाईट भी बाप से करती हूँ और

- बाबा के याद के गद्दे श्रेष्ठ या वहां के आराम के गद्दे

→ वहाँ के विमानों में सिर्फ एक लोक की सैर कर सकेंगे

- यहाँ मैं बुद्धि रूपी विमान द्वारा तीनों लोकों की सैर करती हूँ
- क्योंकि वहाँ सिर्फ विश्वनाथ कहलायेंगे
- और अभी मैं त्रिलोकीनाथ हूँ
- दो नेत्री नहीं यहाँ मैं त्रिनेत्रधारी हूँ

→ मैं संगमयुग में नॉलेजफुल, पावरफुल, ब्लिसफुल हूँ

- पर वहाँ नॉलेज के हिसाब से रॉयल बुद्धू!!

→ वहाँ भले ही विश्व राज्य-अधिकारी होंगे, राज्यकर्त्ता होंगे

- पर यहाँ मैं विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी हूँ

➳ _ ➳ मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा

→ अहो सौभाग्य मेरा

→ वर्तमान समय की प्राप्ति के नशे में.. खुशी में

→ वर्तमान समय के महत्व को समझ

- हर सेकेण्ड और संकल्प को श्रेष्ठ बना रही हूं
- मैं संगमयुगी बादशाह हूं